सिनेमा में राष्ट्रीय आंदोलन की प्रतिध्वनि

डॉ. निलांजना त्रिपाठी

भारतीय सिनेमा इतिहास में भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन की प्रतिध्वनि के संबंध में कुछ कहना जितना ही गंभीर है, उतना ही जटिल भी। यह सत्य है कि सिनेमा का उदय जिस प्रबल आकांक्षा और बेचौनी का परिणाम था उसमें राष्ट्रीय चेतना की लहर और राष्ट्रीय आंदोलन का प्रखर स्वर भी समाहित था लेकिन अनंत संभावनाओं के बावजूद कला के नाम पर उसे गंभीर और अनावश्यक कहा गया। फलतः इसकी स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका होने के बावजूद निर्माता–निर्देशक और अन्य कलाकार सहयोगी बंधु सबको इस यश से वंचित होना पड़ा। प्रारंभ में सिनेमा चूंकि आधुनिक कला माध्यम था जिसके सम्यक् विकास के लिए पूर्ण रूप से जिन वैज्ञानिक साधनों और विवेक की जरूरत थी उसका बहुत अभाव था और ऐसे में देश की राष्ट्रीय ज्वलंत समस्याओं को भी साथ लेकर चलना था। कहना न होगा कि 1931 से पूर्व सिनेमा का युग मूक–युग के नाम से जाना जाता है। यह केवल चित्र था जिसमें आवाज नहीं थी और उसी से हम अपना भरपूर मनोरंजन कर लेते थे। मूक युग की फिल्मों को देखकर हमारे भी भीतर राष्ट्रीय–सामाजिक–सांस्कृतिक प्रेरणाएँ जगती थीं जिनको नजरअंदाज करके आगे नहीं बढ़ सकते थे। मूक सिनेमा ने हमारे समय को चित्रित कर उससे हमारा संबंध जोड़ा और बताया कि सिनेमा मनोरंजन का उत्तम माध्यम है लेकिन यह ज्ञानवर्धन के लिए भी अत्यंत बेहतरीन माध्यम है।